(1) Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
Sub:- Auditing (Hons)
Paper:- II
SNSRKS College, SAHARSA

Lecture:- 52

B. Com Part 1st

Sub:- Auditing (Hons)

*Introduction*

## * (अंकेक्षण प्रणाली) *

## Audit System

अंकेक्षण प्रणाली अंकेक्षण तकनीकों को प्रयोग में लाने की विधि है। इसे अंकेक्षण कार्य की विधि भी कह सकते हैं। अंकेक्षण के कार्य का सम्पादन किस प्रकार किया जाय, इसकी कोई प्रमापित (Standard) विधि नहीं है। अंकेक्षक की योग्यता, कार्य का स्वभाव अंकेक्षण की आवश्यकता, परिस्थितयाँ कुछ ऐसे तत्व हैं जो अंकेक्षण प्रणाली को प्रभावित करते हैं। अंकेक्षण प्रणाली को निम्नलिखित शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है:-

1) विशेष चिह्नों का प्रयोग (Use special Tick),
2) नैत्यक जाँच (Routine checking),
3) परीक्षण जाँच (Test checking),
4) समस्त जाँच (Overall check),
5) गहन जाँच (Intensive Auditing),
6) प्रमाणन (Vouching)
7) सत्यापन एवं मूल्यांकन (Verification and Valuation)

## * I. विशेष चिन्हों का प्रयोग *
## (Use of special Tick)

अंकेक्षण करते समय अंकेक्षक के द्वारा संस्था के विभिन्न लेन-देनों की जाँच करते समय कुछ विशेष चिन्हों का प्रयोग करना चाहिए। सामान्यतः ऐसे △ ✓ ∠ ⊗ इत्यादि हो सकते हैं। इन चिन्हों का करते समय कुछ सावधानियों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है तो निम्नलिखित हैं:

1) एक ही उद्देश्य के लिये विभिन्न संस्थाओं में अलग-अलग चिह्नों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
2) चिह्नों का प्रयोग गोपनीय होना चाहिए अर्थात इन चिह्नों का भेद कर्मचारियों को पता नही लगना चाहिए।
3) एक ही चिह्न का प्रयोग अलग-अलग रंग के पेन्सिलों से किया जाना चाहिए और जिनका अर्थ भी अलग-अलग होना चाहिए।
4) अधूरी जाँच के लिये भी विशेष चिह्न का प्रयोग किया जाना चाहिए।
5) पूर्ण जाँच के लिए अलग चिह्न का प्रयोग किया जाना चाहिए।
6) चिह्न में एकरूपता होनी चाहिए तथा इनका आकार छोटा होना चाहिए।
7) प्रत्येक वर्ष चिह्नों में परिवर्तन किया जाना चाहिए, ताकि कर्मचारी इन चिह्नों का अर्थ नही समझ सके।
8) दोबारा लिखे गए (Over-writing) रकमों पर विशेष चिह्न लगाया जाना चाहिए जिससे उनमें बाद में छल कपट की गुंजाइश समाप्त हो जाए।

## * II नैत्यक जाँच (Routine Checking) *

नैत्यक जाँच से अभिप्राय उस जाँच से है जिसके अंतर्गत संस्था की लेखा-पुस्तकों की जाँच स्वाभाविक ढंग से होती है और जिन्हें संस्था व्यवस्थित रूप से अपने पास रखती है। नैत्यक जाँच के अंतर्गत निम्नांकित क्रियाएं शामिल की जाती है :-

i) संस्था की प्रारंभिक पुस्तकों से खाताबही में की गयी खतौनी की जाँच,
2) रोजनामचा तथा खाता बही के योगों की जाँच,
3) खाताबही में खाता के निकाले गये शेषों की जाँच,
4) खातों के शेषों के हस्तान्तरण की जाँच
5) तलपट की जाँच,
6) विभिन्न लेन-देनों से संबंधित प्रमाणकों की जाँच
7) तलपट में लिखे गए विभिन्न शेषों की जाँच
8) तलपट के योगों की जाँच
9) तलपट के नाम (Dr) व जमा (Cr) में Posting की जाँच इत्यादि।

## * III परीक्षण जाँच (Test Checking) *

प्रत्येक लेखा-पुस्तकों की सघन जाँच अंकेक्षण का मुख्य उद्देश्य होता है। जिन संस्थाओं में आन्तरिक जाँच प्रणाली सुदृढ़ होती है, वहा प्रत्येक लेखा-पुस्

लेखा-पुस्तकों की सहन जाँच आवश्यक है, कुछ खास लेखा-पुस्तकों की जाँच कर उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है। परीक्षण जाँच के ही आधार पर अन्य खातों की शुद्धता का अनुमान लगाया जा सकता है। परीक्षण जाँच के ही आधार पर अन्य खातों की शुद्धता का अनुमान बेफिक्र होकर लगाया जा सकता है कि वह खाता पूरी तरह शुद्ध होगा।

दूसरे शब्दों में, संस्था की संम्पूर्ण लेखा पुस्तकों की जाँच नहीं कर खास-खास लेखा पुस्तकों की जाँच को ही परीक्षण जाँच कहते है। परीक्षण जाँच इस सिद्धान्त पर आधारित होती है कि जो विशेषताएं न्यादर्श (Sample) में पाई जाती है; वे समग्र (Universe) में भी विद्यमान होती है। इस जाँच की मान्यता सभी देशों में प्राप्त है।

## * IV सहन अंकेक्षण / जाँच *
## (Intensive Auditing check)

परीक्षण जाँच के विस्तृत स्वरूप को ही सहन जाँच या गहन अंकेक्षण कहते है। इसके अंतर्गत कुछ विशिष्ट पुस्तकों की ही प्रारंभ से लेकर अंत तक जाँच की जाती है। इस जाँच का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि खातों का अंकेक्षण शीघ्र हो जाय। इससे अंकेक्षक को अंकेक्षण कार्य में सुविधा होती है तथा वह कार्य का निष्पादन शीघ्र कर

कर पाता है। इसके लिये आवश्यकता इस बात की होती है कि संस्था में आन्तरिक निरीक्षण की सुदृढ़ व्यवस्था हो। उदाहरणतः यदि माल के क्रय की सहन जाँच करनी हो तो निम्न प्रक्रियाएं की जायेगी:

i) माल खरीदने के आदेश पत्र की प्रतिलिपि की जाँच
ii) यह देखना कि क्रम का आदेश, अधिकार प्राप्त अधिकारी द्वारा दिया गया है या नहीं,
iii) माल के प्रेषिपत्र की जाँच,
iv) माल स्टॉक में रखा गया या नहीं,
v) वस्तु के प्रमाणपत्र का प्रेषक से मिलान,
vi) भुगतान के आदेश पत्र का सत्यापन,
vii) भुगतान का प्रमाणन (Vouching)
viii) बिन कार्ड में लेखे की जाँच,
ix) अंकेक्षक की गुणवत्ता रिपोर्ट की जाँच, इत्यादि

## * V सम्पूर्ण जाँच *
## (Overall check)

सम्पूर्ण जाँच का अभिप्राय उन प्रक्रियाओं से है जिनसे एक अंकेक्षण किसी संस्था की लेखा-पुस्तकों की सत्यता की जानकारी प्राप्त करता है। नैत्यक जाँच, परीक्षण जाँच या सहन जाँच से यह आवश्यक नहीं है कि लेखा-पुस्तकों की समस्त अशुद्धियों की जाँच की जाये। अतः कोई अशुद्धि छूट नहीं जाये, इसके लिए सभी जाँच विधियों का सम्मिलित रूप का प्रयोग ही सम्पूर्ण जाँच कही

जाती है।

## * VII प्रमाणन * (Vouching)

संस्था में किये गये लेन-देनों की जाँच संबंधित प्रमापकों के आधार पर किया जाना ही प्रमाणन कहा जाता है। प्रमाणक गलत या बनावट तो नहीं है।

## * VIII सत्यापन और मूल्यांकन * (Verification and Valuation)

संस्था में पुस्तकों में दिखायी गई सम्पत्तियों व दायित्वों का पुष्टिकरण ही सत्यापन है। इनका अनुमोदन प्रमाणन से किया जाता है किन्तु इतना ही जानना संतोषप्रद नहीं है बल्कि यह भी जानना आवश्यक है कि अंकेक्षण की अवधि में उन सम्पत्तियों एवं दायित्वों की संस्था में विद्यमानता है या नहीं। इसे हम भौतिक सत्यापन (Physical Verification) भी कहते हैं।

दूसरी ओर, संपत्तियों व दायित्वों का मूल्यांकन, जिनका अभिप्राय है कि संस्था के दायित्व एवं संपत्तियाँ सही मूल्य पर प्रदर्शित किये गये हैं अथवा नहीं। अंकेक्षक का यह अत्यंत ही कठिन काम है। इस सम्बन्ध में अंकेक्षक को यह भी देखना होता है कि स्थायी संपत्तियों पर उचित दर से ह्रास काटा गया है या नहीं।

The end

Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept of Commerce
SNSRKS College, SAHARSA